पाठ 27

भारत की जनजातियाँ

आइए सीखें–

- जनजाति से क्या अभिप्राय है?
- जनजातियों के रहने के क्षेत्र कौन-कौन से हैं?
- मध्यप्रदेश की जनजातियाँ कौन-कौन सी हैं?
- जनजातीय महिलाओं के प्रमुख उद्यम क्या-क्या हैं?

आज रमा खुश थी, क्योंकि अपने पिताजी के साथ वह भी भ्रमण पर जाने वाली थी। रमा के साथ उसके पिताजी जिला- झाबुआ के लिए भ्रमण पर निकले, झाबुआ पहुँचते-पहुँचते वे थक चुके थे। उन्होंने चाय पीकर अपनी थकान मिटाई तथा रमा से कहा कि वह जल्दी सो जाए ताकि सुबह वह भी उनके साथ घूमने जा सके।

झाबुआ में सुबह रमा जल्दी तैयार हुई तथा पिताजी के साथ चल पड़ी। वे वहाँ के एक छोटे से गाँव का भ्रमण करने गए। रास्ते में रमा ने पिताजी से अचानक पूछा, "पिताजी, यहाँ के लोगों का पहनावा कुछ अलग-सा लग रहा है और ये लोग कुछ अलग ही बोली बोल रहे हैं। ये लोग कौन हैं?"

पिताजी ने बताया, "रमा, ये लोग यहाँ की स्थानीय जनजाति के लोग हैं।"

रमा ने पूछा, "ये जनजाति क्या होती है?"

पिताजी ने कहा, "रमा, हम एक जनजाति की पहचान एक ऐसे व्यक्तियों के समूह के रूप में कर सकते हैं, जो समान बोली बोलता हो, समान भू-भाग में निवास करता हो तथा जिनके आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, पूजा-पाठ, परम्पराएँ एक जैसी होती हों तथा जो आपस में ही विवाह संबंध करता हो। हमारे यहाँ अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग जनजातियाँ निवास करती हैं।"

रमा इस संबंध में और अधिक जानना चाहती थी।

तब पिताजी ने कहा, "हम विस्तार से इस पर विश्रामगृह जाकर चर्चा करेंगे।"

रमा बहुत खुश थी, उसने आज यहाँ आकर जनजाति के लोगों को देखा तथा उनकी बोली को भी सुना। उनका पहनावा भी रमा को अच्छा लगा।

वे विश्रामगृह पहुँचे। रमा जल्दी से भोजन कर पिताजी के पास पहुँची, पिताजी ने उसे कुछ किताबें बताईं, जिसमें भारत की जनजातियों के संबंध में उनके रहने के स्थानों, उनके रहन-सहन तथा वेश-भूषा आदि का उल्लेख था।

पिताजी ने बताया, "रमा, साधारणतः जनजातियों में उन जातियों की गिनती होती है जो सीमित भू-भाग में रह गईं हैं और जिनका विशाल भू-भाग में रहने वाले अन्य लोगों से प्रत्यक्ष संबंध कट गया है तथा वे उनके साथ घुलमिल नहीं सकीं हैं।" इसके बाद पिताजी ने कहा,

''रमा बेटी, रात बहुत हो गई है, कल दूसरे गाँव भी जाना है, अतः शेष चर्चा हम कल भ्रमण से लौटने पर करेंगे। तब मैं तुम्हें देश की विभिन्न जनजातियों और उनके रहन-सहन के बारे में बताऊँगा। जिले में स्थापित पुस्तकालय में इनके बारे में बहुत-सी सामग्री उपलब्ध है। हम जल्दी लौट कर पुस्तकालय जाएँगें और जानकारी लेंगे।''

अगले दिन भ्रमण से लौटते समय उन्हें फिर देरी हो गई। पर रमा ने सोच रखा था कि आज पिताजी से पूछे बिना वह सोएगी नहीं।

भोजन करने के पश्चात् पिताजी ने रमा को भारत में फैली विभिन्न जनजातियों के विषय में बताया, जैसे आन्ध्रप्रदेश की प्रमुख जनजाति **चेंचुस** है। इस प्रदेश में अन्य जनजातियों में **जाटापुस, कोलम, नायकपोड, सावरस** आदि आती हैं।

बिहार और झारखण्ड में प्रमुख जनजातियाँ **खारियाँ, ओरांव** तथा **खरवार** निवास करती हैं। बिहार में एक पिछड़ी जनजाति **कहार** नाम से पहचानी जाती है। यह जनजाति घने जंगलों में झोपड़ी बनाकर निवास करती है तथा भोजन के लिए ये लोग आसपास के जंगलों पर निर्भर रहते हैं।

गुजरात की प्रमुख जनजातियाँ **सिरोही, उदयपुर, कोटरा, सरसों, दाँता** हैं। इसी प्रकार गुजरात के सीमावर्ती जिलों में **नायकड़ा** जनजाति निवास करती है। नायकड़ा, गुजराती बोली बोलने वाली एक प्रमुख जनजाति है।

उड़ीसा में एक तिहाई जनसंख्या जनजातियों की हैं। राज्य में कोरापुट, मयूरभंज, सुन्दरगढ़, गंजाम तथा बौध खौंडपल्ल का कुछ हिस्सा भी जनजातियों के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ का परिदृश्य अनेक अर्थों में बहुरंगी और महत्वपूर्ण है। चालीस से अधिक जनजातियाँ इस प्रदेश में निवास करती हैं। इनमें प्रमुख रूप से **गोंड़, बैगा, भील, भीलाला, बरेला, भारिया, कंवर, कनकार, सहरिया** आदि हैं।

जनजातियों के लोग प्रकृति की अधिकांश चीजों को अपने देव के वरदान के रूप में स्वीकार करते हैं। जनजाति के लोग अत्यंत मेहनती और भोले होते हैं। ये अपनी वीरता और मुक्त जीवन शैली के लिए भी जाने जाते हैं। जनजातियों में कपड़ों के अतिरिक्त प्रायः उनकी वेशभूषा और रंग-सज्जा बहुत आकर्षक लगती हैजनजातियों की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी सामुदायिक भावना। वे सामूहिक जीवन जीते हैं। गीत, संगीत, नृत्य, उत्सवों और अन्य सामाजिक कार्यों को सामूहिक रूप से मनाते हैं। इसके साथ ही उनका आन्तरिक अनुशासन और व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है।

इन जनजातियों में स्त्रियाँ चाँदी, काँसा एवं मोती के आकर्षक गहने धारण करती हैं। आमतौर पर ये गोदने भी गुदवाती हैं। नृत्य और संगीत इनके जीवन में पूरी तरह समाया हुआ है।

पारंपरिक गहने पहने हुए बैगा युवती
चित्र क्र.-54

इनका मुख्य व्यवसाय कृषि करना, मछली पकड़ना तथा वनों से फल-फूल एकत्र करना है।

अंडमान द्वीप समूह के निवासियों को दो वर्गों में बाँटा गया है- **ओंग** तथा **जरावा**। ओंग छोटे अंडमान द्वीप में रहते हैं और जरावा दक्षिण अंडमान के भीतरी भागों में निवास करते हैं। अंडमान द्वीप समूह की यह जाति बहुत पिछड़ी हुई है।

चित्र क्र.- 55: बस्तर का एक जनजातीय लोकनृत्य

नीलगिरी के पहाड़ियों की जनजातियों में **टोडा** नाम की जनजाति नीलगिरी की पहाड़ियों में अत्यन्त प्राचीन काल से रहती चली आई है। **पेकी** या **पेकान, कदन, केना** और **टरल** इनमें प्रमुख हैं।

उत्तर-पूर्वी राज्य में असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश में भी जनजातियाँ निवास करती हैं— मोनपास, मिजिस, अकास और खवास, डफलास, असम में खासी जैंतिया पहाड़ियों, गारो पहाड़ियों, मिजो पहाड़ियों, उत्तर उचार पहाड़ियों तथा मिकिर पहाड़ियों को भी इसमें शामिल किया गया है।''

रमा ने पिताजी से पूछा, ''पिताजी, क्या आदिवासियों से संबंधित कुछ पर्यटन स्थल भी हैं?'' पिताजी ने कहा, ''हाँ, हम कुछ दर्शनीय स्थान भी देखने चलेंगे। भारत वर्ष में ऐसे अनेक स्थान हैं, जहाँ जनजातियों की कलाकृतियों के संग्रहालय स्थापित किए गए हैं। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में मानव संग्रहालय स्थापित है, जहाँ इनके जनजीवन को दर्शाया गया है तथा इनके अलावा पचमढ़ी में अनेक गुफाएँ हैं, छिन्दवाड़ा के तामिया में पातालकोट दर्शनीय स्थल है। रायसेन में भीमबेटका तथा धार के पास बाघ की गुफाएँ स्थित हैं।

छत्तीसगढ़ में दन्तेश्वरी (बस्तर) स्थान है, जहाँ की जनजातियाँ कला एवं संस्कृति से ओतप्रोत हैं। उपरोक्त सभी दर्शनीय स्थान पर्यटन स्थल का रूप ले रहे हैं।

आदिवासी जनजीवन एवं कृषि

भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी जनजातियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि तथा वनोपज है। आदिवासी कृषि कार्य मूलतः जीवन-निर्वाह के लिए करते हैं, लाभ के लिए नही। इनकी कृषि का प्राचीन तरीका स्थानान्तरित कृषि है। जिसे अलग-अलग भागों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे देहिया, बेवर, पेढ़ा, मादन, दिप्पा आदि। भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में इसे 'झूमिंग कृषि' कहा जाता है। इस प्रकार की कृषि में खेती करने के लिए आवश्यक क्षेत्र को जला कर साफ करके नई भूमि प्राप्त की जाती है जलाने से वातावरण प्रदूषित होता है। अब वन संरक्षण के लिए इस प्रकार की कृषि का प्रचलन

कम होता जा रहा है।

जोतों का आकार -

आदिवासियों की कृषि के जोतों का आकार प्रायः बहुत छोटा होता है और यह एक परिवार के भरण पोषण के लिए पर्याप्त नहीं है अतः वे जीवनयापन के लिए वनोपज पर अधिक निर्भर रहते है। भारत के विभिन्न राज्यों में जोतों का आकार भी समान नहीं पाया जाता है।

प्रमुख फसलें

आदिवासी जनजातियों की बसाहट प्रायः पहाड़ी व उबड़-खाबड़ क्षेत्रों में है, अतः इनके खेतों की उर्वरा शक्ति बहुत कम है। यहाँ मुख्य रूप से मोटे अनाज कोदों, कुटकी, बाजरा व चावल आदि उगाया जाता है।

खेती का तरीका

पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के बहुत प्रयास किये गये है, लेकिन कई जनजाति समुदाय परम्परागत तरीकों एवं आज भी हल बैल आदि का उपयोग करते हैं तथा सिंचाई, उन्नत बीजों व उर्वरक आदि का उपयोग भी नहीं करते हैं। अतः आवश्यकता है कि शिक्षा के माध्यम से जागरुक कर कृषि उत्पादकता बढ़ाने के बारे में जानकारी दी जाये ताकि वे कृषि के उन्नत तरीकों को अपना सकें और उनका आर्थिक विकास हो सकें।

जनजातियाँ हस्तशिल्प में भी पीछे नहीं हैं। बच्चों के खिलौने बनाने में इनकी प्रतिभा तो सभी जानते हैं। ये बच्चों के खिलौने में चक्की, बैल, मिट्टी के पहियों वाली बैलगाड़ी, भोजन के बर्तन आदि बनाते हैं। इसके अतिरिक्त महिलाएँ रस्सी बनाने के लिए कई तरह की घास भी एकत्रित करती हैं। उनसे टोकरियाँ और रस्सियाँ बनाती हैं। ये लोग खेती तथा जंगलों में काम भी करते हैं। जंगलों में शहद, चिरौंजी तथा फलों को इकट्ठा कर उन्हें बाजारों में बेचते हैं। हस्तकरघा में ये शालें, कम्बल, बैग, गर्म कपड़े भी बनाते हैं, जिनकी महानगरों में बहुत माँग है। दिल्ली महानगर में कनाट प्लेस में इनके बड़े-बड़े एम्पोरियम हैं। भोपाल में लगने वाले 'हाट' में भी इनके द्वारा निर्मित वस्तुओं की काफी माँग है।

वर्तमान समय में देश के आर्थिक और सामाजिक विकास तथा सरकारी योजनाओं के कारण जनजातीय पुरुषों और महिलाओं में काफी बदलाव आया है, अब जनजातियों में आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ है, स्वास्थ्य सेवाएँ वहाँ उपलब्ध हो रही हैं तथा संचार एवं आवागमन के साधनों में भी बदलाव आ रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी इनके उत्थान के लिए शासन द्वारा जनजातीय बालिकाओं की शिक्षा के लिए कन्या शिक्षा परिसर एवं कन्या मैट्रिकोत्तर छात्रावास, बालिका आश्रम शाला आदि विशेष प्रावधान किए गए हैं।''

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) भोजन के लिए जनजातीय लोग निर्भर रहते हैं–

(अ) वर्षा पर (ब) कृषि पर
(स) जंगलों पर (द) इनमें से कोई नहीं

(2) उड़ीसा की एक तिहाई जनजाति किन क्षेत्रों में निवास करती है–
(अ) मोनपास, मिजिस (ब) कोरापुट मयूरभंज
(स) अकास, रखवास (द) इनमें से कोई नहीं

(3) मध्यप्रदेश में मानव संग्रहालय स्थित है–
(अ) इन्दौर (ब) उज्जैन
(स) भोपाल (द) जबलपुर

(4) हस्तशिल्प द्वारा निर्मित कौन-सी चीजों की माँग है–
(अ) चूड़ियाँ (ब) शालें, कम्बल
(स) चप्पल (द) सूती कपड़े

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) बिहार की एक पिछड़ी जनजाति ..... नाम से पहचानी जाती है।
(2) अंडमान द्वीप समूह के निवासियों को दो वर्गों ..... तथा ..... में बाँटा गया है।
(3) आंध्रप्रदेश की प्रमुख जनजाति ..... है।
(4) आमतौर पर महिलाएँ शरीर पर ..... गुदवाती हैं।

3. निम्नलिखित की सही जोड़ियाँ बनाइए–

	(अ)		(ब)
(1)	गुजराती जनजाति	-	रस्सी, टोकरियाँ बनाना
(2)	महिलाओं का उद्यम	-	मध्यप्रदेश
(3)	भील, भीलाला	-	नायकड़ा

4. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) जनजाति संस्कृति किसे कहते हैं?
(2) भारत में जनजातियों के रहने के क्षेत्र कौन-कौन से हैं?
(3) जनजातियों का प्रमुख भोजन क्या है?
(4) पेकान जनजाति किस प्रदेश की है?

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) भारत की क्षेत्रीय जनजातियों का वर्णन कीजिए।
(2) मध्यप्रदेश की जनजातियों के बारे में समझाइए।
(3) जनजातीय महिलाओं के प्रमुख उद्यमों का वर्णन कीजिए।

परियोजना कार्य–

- अपने क्षेत्र में पाई जाने वाली किसी एक जनजाति की विशेषताएँ पता कर उस पर आलेख तैयार कीजिए।